जीवन में फ़ेसबुकिया लफड़े

हम भारतीय कुछ मामलों में बड़े सेंटिमेंटल और क्रियेटिव हैं, जैसे देश में प्रधानमंत्री एक बनता है और जो बनता है वह सालों-साल चलता है, पर हर विद्यार्थी यह निबंध ज़रूर लिखता है कि यदि वह देश का प्रधानमंत्री होता तो क्या करता।

हाय रे एक छुट्टी

वैसे छुट्टी की हसरत हर किसी को होती है बस किसी की हसरत पूरी हो जाती है और किसी की बस जस की तस धरी रह जाती है। छुट्टी तो अपनी जगह है; इस छुट्टी से बड़ी बात है इसे लेने का हुनर! जो छुट्टी लेने का हुनर जानते हैं, वे चाहे जितनी छुट्टी ले लें... ख़तम ही नहीं होती है और जो इस कला (छुट्टी लेने की कला) से महरूम हैं उनकी सी एल तक लैप्स हो जाती है।

ऑफ़िस रस

ऑफ़िस रस के अभाव में प्राण त्याग देते हैं

उनकी भटकती आत्माएँ ऑफ़िस कॉरीडोर में दूसरों की रस चर्चा से रसस्वादन करती पाई जाती हैं...

माँगने का हुनर

माँगने के मामले को छोटा मत समझिये, दुनिया में ऐसा कोई नहीं जो हाथ फैलाये न खड़ा हो। क्या राजा क्या रंक सभी मंगते हैं। कोई धन दौलत माँगता है तो कोई औलाद, कोई सुख चैन माँगता है तो कोई कोई तरक्क़ी। किसी का काम थोड़े-बहुत से ही चल जाता है तो कोई छप्पर फाड़ कर माँगता है। मिलना न मिलना और बात है पर माँगना तो हक़ है। कभी वोट माँगे जाते हैं तो कभी नोट। और कहते हैं जब दवा काम नहीं करती तो दुआ माँगी जाती है।

X X X

देखिये माँगने में एक बड़ा ही ख़ूबसूरत अहसाह है और विश्वास मानिये, अपनों से अपनापन बनाये रखने के लिये उनसे कुछ न कुछ माँगते रहना चाहिये।

X X X

सुबह उठ कर अपने बड़े बुज़ुर्गों का आशीर्वाद

ज़रूर माँगें, वे ज़रूर बेहद ख़ुश हो जायेंगे और अपने जानने वालों के बीच आपके गुण गायेंगे। इतना ही नहीं उन्हें इस बात की आत्मिक सन्तुष्टि होगी कि उन्होंने अपने बच्चे को बड़े अच्छे संस्कार दिये हैं।

रही दोस्तों की बात तो उन्हें अपना बनाये रखने के लिये सलाह ज़रूर माँगिये जितने ही क़रीबी मामले में आप उनसे सलाह माँगेंगे वे उतने ही आपसे जुड़ जायेंगे।

X X X

आजकल सब्ज़ी वाले से धनिया-मिर्ची नहीं माँगनी चाहिये। वैसे ही पड़ोसी से प्यार और नेता से उपहार न माँगने में ही भलाई है।

इम्पोर्टेड राइटर की वैल्यू

इस देश में जब कोई राइटर विदेश से "बेस्ट सेलर" बन कर लौटता है तो वह हाथों-हाथ छा जाता है। जबकि अपने देश में बीस-पच्चीस साल से हिन्दी पेपर में क़लम घिस्सू बस पब्लिशर के चक्कर काटता रह जाता है, जो उसे बताता है देखो अख़बार में छपने और अपनी किताब को बेच कर बेस्ट सेलर बनने में बहुत फ़र्क़ है।

X X X

और प्रकाशक बताता है कंटेट उतना इम्पार्टेंट नहीं होता जितना किसी किताब के बिकने के लिये उसका कंट्रोवर्शियल या राइटर का पॉपुलर होना।

मीठी-मीठी बातों से बचना ज़रा

अब आपसे कहाँ तक बतायें इन मिठास भरी बातों का जलजला। कहीं शॉपिंग करने जाइये तो दो-चार लोग फ़्री गिफ़्ट कांटेस्ट का फ़ॉर्म लिये घूमते मिल जायेंगे। जिस में वह पाँच रुपये का चम्मच पकड़ा कर आपकी दी हुई इन्फ़रमेंशन से आपकी ख़रीदारी की औक़ात टटोलते हैं। उनका बस चले तो अपने सर्वे में आपके अकाउंट का नम्बर व एटीएम पिन का पासवर्ड तक पूछ लें वह भी मीठी-मीठी बातें करते हुए। आजकल मुझे मीठी-मीठी बातें सुन कर बचपन में सुना गाना याद आता है - "मीठी-मीठी बातों से बचना ज़रा दुनिया के लोगों में है जादू भरा"।

आजकल मीठी बातों से लोगों को खींचने का हुनर ख़तरनाक स्तर तक जा पहुँचा है। इधर आप

मिठास में उलझे और उधर जेब कटी। वैसे इस मामले में बॉस भी कम नहीं होता जो काम कराते समय तो आपको चने के झाड़ पे चढ़ा के रखता है और नम्बर देते समय उसकी आँख का तारा कोई और होता है। सो भाई साहब मैं एक शे'अर से अपनी बात समाप्त करना चाहूँगा –

"मुझे अच्छे लोग बहुत मिले मैं उनके बोझ से दब गया

कभी कभी जो मिलो मुझे तो ख़राब बन के मिला करो"

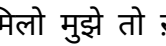

गुरु गूगल दोऊ खड़े

जो गुरु जितना बड़ा पैसे बनाने का खेल सिखा सके, वह उतना ही सफल और उपयोगी बन गया। ऐसे में वह गुरु खेल के क्षेत्र का हो, अध्यात्म का या मेडिकल इन्जीनीयरिंग की कोचिंग क्लास का; वह गुरु न हो कर व्यावसायी है और जब व्यवसाय ही करना है तो काहे का संकोच और काहे का मान-सम्मान। आज गुरु दक्षिणा भी एकलव्य के अँगूठे से आगे बढ़ चुकी है।

कौन सा गुरु अपने दिये हुए ज़रा से ज्ञान और आशीर्वाद के बदले क्या माँग ले, कह नहीं सकते। सो जब आज पहले से गुरु नहीं रहे तो उनकी ही पढ़ाई हुई पौध से पहले से शिष्यों के होने की उम्मीद की भी कैसे जा सकती है। आज गुरु शिष्या से फ़ेसबुक आईडी से ले कर मोबाईल नम्बर तक माँगते नज़र आते हैं। ऐसे ही शिष्य भी गुरु के चरण-स्पर्श जैसी फ़ॉर्मेलटी से कोसों दूर हैं। मैंने तुम्हें फ़ीस दी तुमने बदले में पढ़ाया, न कोई मान-सम्मान और न ही अहसान। यह तो सीधा-सीधा गिव एंड टेक का मामला है। वैसे भी आज गुरु की क्षमता और नैतिकता प्रश्नों के घेरे में है। वह शिष्य की निगाह में सर्वगुण सम्पन्न प्राणी नहीं रहा और कई जगह तो आम देखा जा रहा है कि गुरु गुड़ रह जाते हैं और चेला शक्कर हो जाता है। इसके बाद वह गुरु को ही हिक़ारत की नज़र से देखता है। अब मामला गूगल का जो काम किसी ज़माने में गुरु करता था आज वही काम उस से बेहतर गूगल कर रहा है। गुरु को लोग ज्ञान का भंडार समझते थे। आज गूगल ज्ञान की खान है। ऐसा कोई प्रश्न नहीं जो गूगल से बाऊँस हो जाये

दूध और बाईक का तुलनात्मक अध्ययन

चौधरी के बच्चे एक दिन लड़ते हुए पाये गये, "सुनो बापू एक तो जे मोबाईल म्हारे से ना चलता इसे तू ही रख और ये मैं नया स्मार्ट फोन लाया सी इसमें फेसबुक लोड करान है।"

वह बोला - "तैने भैसे सम्हालन से फुर्सत हो गई जे मोबाईल सम्भालेगो।"

वह बोला, "मैन्ने कुछ ना पता म्हारे दोस्त कह रहे हैं वे आजकल फेसबुक पर दूध बेच के करोड़पति हो गये। थारे इस दो-चार भैंसन में कुछ नहीं रक्खा। मैंने डेरी फार्म का ऐडवांस बिजनेस करना सी।"

दुखी रहने का नैतिक अधिकार

सच मानिये इसी दुखी रहने के नैतिक अधिकार पर न जाने कितने कारोबार टिके हुए हैं। नतीजा यह कि कभी कोई, कभी कोई हमारे दुख-दर्द दूर करने का दावा करता है। कभी सिनेमा की दुनिया में हमारे दुख-दर्द दूर होते हैं, कभी मन्दिर और कभी गीत-संगीत की महफ़िल

में। न जाने कितने ठिकाने बने हुए हैं दुख-दर्द मिटाने के। हम भी अपनी सुविधा के अनुसार दुख-दर्द मिटाने के बहाने और ठिकाने ढूँढ़ते रहते हैं।

वायदे की दुकान से मिक्स मिठाई

आफ़त यह है कि कोई भी एक मिठाई दिल भरने को काफ़ी नहीं है। ऐसे में कॉमन मैन लार टपकाते हुए कहता है, "सुनो भैया सौ ग्राम ईमानदारी, पचास ग्राम विकास, दो सौ ग्राम रोज़गार और हाँ डेढ़ सौ ग्राम महँगाई कम करने का वादा तोल दो। पूरी किलो भर वायदे की मिठाई अफ़ोर्ड करने की अपनी ताक़त नहीं है।"

एकलव्य की गुरुदक्षिणा और वीटो पॉवर

इससे पहले कि सत्ता द्वारा पोषित शिक्षा व्यवस्था जीत जाती और बाज़ार की कोचिंग में पैसे लुटा पढ़ा हुआ छात्र हारता, गुरु द्रोण के मुख से अचानक प्रस्फुटित हुआ – "हे शिष्य गुरु दक्षिणा!"

एकलव्य अभिभूत हुआ। न सही गुरु की लाईव क्लास, वर्चुअल क्लास करने मात्र से ही वे मुझे अपना ऑथेंटिक शिष्यत्व प्रदान कर रहे हैं तो इस में ग़लत क्या है? कुछ भी हो मुझे एक बड़े और महान गुरु का शिष्य कहलाने का सौभाग्य तो प्राप्त होगा। वैसे भी बिना बड़े गुरु का टैग लगे कोई अपनी जगह नहीं बना पाता। इस मामले में मुझे सैलून सब से ईमानदार लगे जो किसी नामी हेयर ड्रेसर की फ्रैंचाईज़ी लेने के बाद भी ख़ुद को उस का शिष्य ही बताते हैं और हर गली-मुहल्ले में पच्चीस से तीस रुपये हेयर कटिंग के प्रोफ़ेशन का सैलूनीकरण कर, लोगों के मन में आम आदमी से ऊपर उठाने का भाव पैदा कर, डेढ़ दो सौ रुपये बाइज़्ज़त खींच लेते हैं।

ख़ैर एकलव्य घुटने के बल नतमस्तक हो दाहिने अँगूठे को तीर से काटने का उपक्रम करते हुए बोला, "गुरुदेव अँगूठा अर्पित करूँ।"

X X X

एकलव्य ने गूगल में युद्ध में विजय के लिए माँगे जाने योग्य सामानों की लिस्ट देखी। उसे कवच, कुंडल और अँगूठे सर्च में कहीं नहीं मिले।

होम वर्क में लव लेटर

"सुनो जी तुम्ही बताओ बच्चों को ऐसे लेटर लिखने के लिए होम वर्क में दिये जाते हैं क्या? हमारे ज़माने में तो लव बोलते ही स्कूल में पिटाई हो जाती थी। हमने तो गाय या पोस्टमैन पर निबंध लिख कर ग्रेजुएशन पूरी कर ली थी, बहुत हुआ तो छुट्टी के लिये आई एम सफ़रिंग फ़्राम फ़ीवर वाली एप्लीकेशन लिखने को आ गयी। वैसे भी हमने कौन सा रिक्की को लिटरेचर में पीएच.डी. करानी है। उसे भी तो ट्वेल्थ पूरा कर के इंजीनियरिंग ही करनी है।" वह आगे जोड़ेगी-

"सुनो जी तुम ऐसा वाहयात होम वर्क देने के लिये लिटरेचर वाली मैडम की कम्प्लेंट क्लास टीचर से कर दो। ऐसे तो छोटे-छोटे बच्चों के कैरेक्टर ख़राब हो जाएँगे। हम बच्चों को पढ़ने-लिखने के लिए स्कूल भेजते हैं या लव सीखने-सिखाने। हाय मुझे तो बोलते हुए भी शर्म आती है।"

ऑन लाइन शॉपिंग में कबीर दर्शन

मैं मोबाईल पर विभिन्न ऑन लाइन शॉपिंग साईट में आफ़र ढूँढ़ रहा था कि देखा कोई साधु डिज़ायनर आध्यात्मिक चोले में सोटा चला रहा है। पहले तो मुझे लगा हो न हो यह कोई वायरस या लाईव ऐड है, पर ध्यान से देखा तो चेहरा किसी नामी, महान ज्ञानी से मिलता-जुलता दिखा। हाँ, पैर में एलेक्ट्रॉनिक खड़ाऊ नज़र आई जो एलईडी फ़िटेड बल्ब से लप-लप कर रही थी।

मैं सेफ़्टी फ़ीचर के मद्दे नज़र इसे इग्नोर करने ही वाला था कि लगा एक सोटा मेरे सिर पर पड़ा हो। मैं झन्ना सा गया, कहाँ मैं छुट्टी के दिन ई-शॉपिंग के ऑफ़र से मालामाल होने के सपने देख रहा था कि कहाँ बैठे-बिठाये शॉपिंग साईट पर भी दर्शन की चाबुक माथे पर पड़ गई। ज्ञान की परछाई सी आँखों पर छाने लगी।...

फटीचर का ड्रेस कोड

फटीचर की चाल में कैट वाक के लटके-झटके थे। उसकी स्माईल से स्टारडम टपक रहा था और वह

हाथ हिला-हिला कर फ़्लाईंग किस भी दे रहा था। बीइंग अ सरप्राईज़ आईटम, फोटो फ़लैश धड़ाधड़ चमक उठे। हाल में बैठे लोग सिसकारी भरने लगे, "व्हाट ऐ नेचुअरल ऐक्टिंग, सर जी मान गये अपने डिज़ायनर जी को! हर बार कुछ नया करते हैं। बॉस क्या मॉडल उठाया है। हो न हो एनएसडी का टॉपर होगा।"

"अरे नहीं बॉस मुझे तो कोई एनआरआई लगता है।"

हाल में तालियाँ बज रहीं थीं, फ़लैश चमक रहे थे और अपने फटीचर जी बाग-बाग हो रहे थे तभी किसी एक्स्पोर्टर ने पूछा, "सर आपका ड्रेस कोड?" और यहीं मात खा गया फटीचर! ड्रेस कोड यह क्या होता है?

पहले तो ऐलीट क्लास ने सोचा यह कोई ऐक्टिंग कर रहा है और अपना सीक्रेट नहीं बताना चाहता। लेकिन उसके दाँत और हाव-भाव गहराई से देखते ही ताड़ने वाले ताड़ गये, यह कुदरत का अजूबा नहीं सड़क का असली फटीचर है।

चश्मे क़ातिल मेरी दुश्मन थी हमेशा

लेकिन –

आप से क्या बतायें ये दोस्ती और दुश्मनी कब समझ में आने लगती है? जब आप कुछ आगे बढ़ते हैं तो ज़माने भर को दुश्मन बना लेते हैं, अर्थात् अगर आपका कोई दुश्मन नहीं है और आप से कोई ईर्ष्या नहीं कर रहा है तो मान कर चलिये कि अभी आप लो-प्रोफ़ाईल हैं। वैसे आजकल मुझे असली ज्ञान व्हाट्सऐप ग्रुप से मिलता है। सुबह से शाम तक इतने इकट्ठे हो जाते हैं कि उन्हें ही किसी तार में पिरो दें तो कम से कम दो-चार क़िस्से तैयार हो जायें। अभी लेटेस्ट किसी ने लिखा कि यदि कोई आपकी आलोचना कर रहा है तो नाराज़ मत होइये और न ही ग़ुस्सा करिये; इस का अर्थ यह समझिये कि आपके भीतर कोई तो गुण है जिस से वह आपको नीचा दिखाने के लिये आप के पीछे पड़ा हुआ है। वाक़ई बात में सार नज़र आया। मुझे लगता है आजकल बच्चों को हिन्दी की किताब में सूर कबीर के दोहे न पढ़ा कर सोशल मीडिया के मैसेज पढ़ाने चाहियें।

बेइज़्ज़ती भी कोई चीज़ होती है

वह ज़माना गया जब आदमी इज़्ज़त के लिये जीता था। आजकल जिसे देखो वह बेइज़्ज़ती करने और कराने पर तुला हुआ है। कई तो ऐसे हैं जो इसे शान के साथ गले से लगाये रखते हैं। इतना ही नहीं बहुत से लोग बेइज़्ज़ती के लाईव टेलीकास्ट के मुरीद हो चुके हैं। वे एक से एक ऐसी बेइज़्ज़ती भरे कारनामें करते हैं ताकि लगातार ख़बर में बने रहें।

कविता और काल सेंटर

तूने कविता लिखने का अपराध किया है और विश्वास मान तू इस जहां में इकलौता अपराधी नहीं है। अपने आस-पास नज़र घुमा के देख कि सोशल साईट्स पर, ब्लॉग्स पर और गली-मुहल्ले में किस क़दर तुझ जैसे अपराधी फैले हुए हैं। तू उन सब में और बड़ा अपराधी है कि तूने कविता लिख कर छपने को भेज दी और सब से बड़ा अपराध तो तूने यह कर डाला कि कविता लिखी सो लिखी, छपने को भेजी सो भेजी, तूने संपादक महोदय से उसके बारे में पूछने का अपराध भी कर दिया कि कब छपेगी?

भाई तू डिमांड में है

पुराने ज़माने का हीरो जब सड़क से उठ कर बँगला खड़ा करता और अपने माँ-बाप पर अत्याचार करने वालों से चुन-चुन के बदला लेता तो हाल में बैठी पब्लिक इमोशनल हो कर सीटी और ताली बजाने लगती थी। उस ज़माने में हीरो की घुटने पर फटी जींन फ़ैशन आईकॉन बन गयी थी। आज फिर से वही ट्रेंड लौट आया है।

आज हमारे और आपके रहन-सहन का तरीक़ा दु:ख-सुख सहने की ताक़त पोलिटिकल आईकॉन बन गयी है, सो जिसे भी आगे बढ़ने की दरकार नज़र आती है वह अपनी क़ीमती घड़ी, महँगी ड्रेस और ब्रांडेड जूता उतार कर जनपथ पर सस्ती पैंट शर्ट और मफ़लर ढूँढ़ता नज़र आता है। आज फुटपाथ पर सोने वाला, सड़क के किनारे रेहड़ी लगाने वाला और पानी-पूरी बेचने वाला डिमांड में है।

सोना प्याज और सेन्सेक्स

वह बोला, “तुम्हें क्या पता कि मैं कितने दबाव में हूँ? मैं इस देश इकलौता जीव हूँ जो सारा दबाव ख़ुद पर झेल कर चुपचाप सहता रहता हूँ। जिसे देखो वह हमें दबाता रहता है, कभी बैंकिंग सेक्टर तो कभी उपभोक्ता के विकास की माँग, कभी लो ईएमआई का फ़ैक्टर तो कभी फ़ॉरेन एक्सचेंज का फ़ैक्टर ज़रा ध्यान से देख कर बताओ कौन है जो मुझे बख्शता है।”

वाक़ई बात में दम नज़र आया मुझे। अब तो बस सेन्सेक्स बचा था जो देश में सब से तेज़ गिर रहा था। इस बार मुझे उसके कैरेक्टर पर डाऊट हुआ।

स्मार्ट दिखने के चक्कर में

“फ़ेसबुक अकांउट बना लेने से या दिन भर गर्लफ़्रेंड-गर्लफ़्रेंड चिल्लाने से कोई बूढ़ा जवान हो जाता तो डॉक्टर कब का इंटरनेट टॉनिक बना के बाज़ार में उतार देते।"

ऑन लाइन शॉपिंग में कबीर दर्शन

मैं मोबाईल पर विभिन्न ऑन लाइन शॉपिंग साईट में आफ़र ढूँढ़ रहा था कि देखा कोई साधु डिज़ायनर आध्यात्मिक चोले में सोटा चला रहा है। पहले तो मुझे लगा हो न हो यह कोई वायरस या लाईव ऐड है, पर ध्यान से देखा तो चेहरा किसी नामी, महान ज्ञानी से मिलता-जुलता दिखा। हाँ, पैर में एलेक्ट्रॉनिक खड़ाऊ नज़र आई जो एलईडी फ़िटेड बल्ब से लप-लप कर रही थी।

मैं सेफ़्टी फ़ीचर के मद्दे नज़र इसे इग्नोर करने ही वाला था कि लगा एक सोटा मेरे सिर पर पड़ा हो। मैं झन्ना सा गया...

ख़्वाहिशों के दाम

“ये जो कुछ लोग नज़र आते हैं दीवाने से, इनको मतलब है न साक़ी से न पैमाने से।”

सच मानिए जो लोग ख़ुश नज़र आते हैं, इन्हें

ख़ुशी के लिए कोई सामान नहीं चाहिए, इन्हें तो बस ख़ुश रहने का बहाना चाहिए। ऐसे लोग भी हैं जो घर में साईकिल ले कर आएँगे और ख़ुशी के मारे झूम उठेंगे। इन्हें सौ रुपये के मोबाईल री चार्ज पर अगर दस रुपए का गिफ़्ट वाउचर मिल जाये तो ख़ुशी से दोस्तों को पचास रुपये के समोसे खिला देंगे।

वहीं ऐसे भी लोग हैं जो घर में गाड़ी लाने के बाद भी दुखी हैं... बीएमडब्लू नहीं आई तो क्या गाड़ी आई? कुछ ऐसे मिलेंगे जिनकी पाँचों उँगलियाँ घी में होंगी पर दिल और दिमाग़ ख़्वाहिशों के आगे मजबूर है।

डेढ़ इंच मुस्कान वाले लोग

जब भाभी जी ने पूछा हँस क्यों रहे थे तो जवाब देते न बना बोले, व्हाट्सऐप पर एक चुटकुला आया था वही सोच कर हँस रहा था।

इतना सुनते ही उन का ग़ुस्सा भड़क उठा – "भाड़ में गया तुम्हारा व्हाट्सऐप और चुटकुला! मैंने देखा है हाँ... जिन चुटकुलों पर तुम हँसते हो, वे रोने लायक़ भी नहीं होते।"

इसके बाद तो मेहरा जी सिर झुकाये डाँट खाते रहे – “शर्म नहीं आती तुम्हें बेवजह हँसते? थोड़ा घर गृहस्थी और भजन-पूजन में दिल लगाया करो। इतनी उम्र हो गई है तुम्हारी और अभी भी दिमाग़ में घटिया चुटकुले चलते रहते हैं। तुम्हें क्या है न घर की चिंता न दीन दुनियाँ की। रहा ऑफ़िस तो वो भी मुझे पता है कितना काम करते हो।”

मगर मेहरा जी भी अपनी आदत से मजबूर हैं जैसे ही प्रवचन रुका वे सफ़ाई देने में जुट गए,

– “देखो समझा करो, दुनियाँ में जो सीरियस लोग हैं उन्होंने ही कौन सा तीर मार लिया है?...